سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ

सनुरीहिम आयातिना फ़िल्आफ़ाक़े वफ़ी अन्फुसिहिम हत्ता य त बैय न लहुम अन्नहुल्हक़

तर्जुमा- हम उन्हें अ़न्क़रीब दिखाएंगें अपनी निशानियाँ
काइनात में और उनकी जानों में हत्ता कि वोह
जान जायेंगे कि ये हक़ हैं।
(कुरान)

शम्स

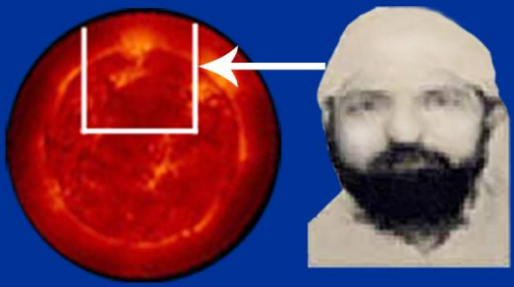

मशरिक़ से उभरते हुए
सूरज को ज़रा देख!
(अ़ल्लामा इक़्बाल)

क़मर

इमाम मेहदी का चेहरा चाँद
में होगा!(इमाम जाफ़र
सादिक़) रज़ि.

हज्र अस्वद

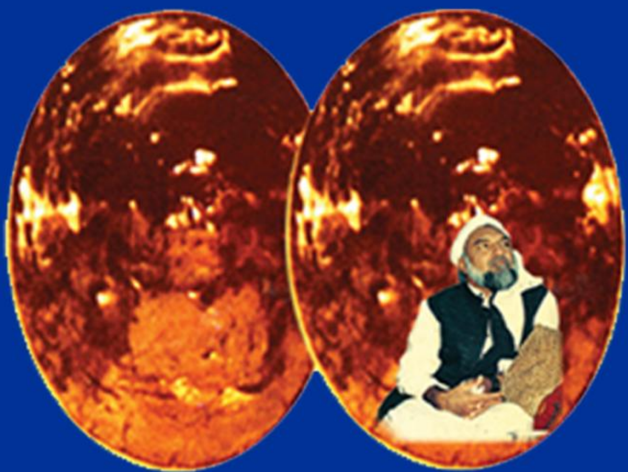

इमाम मेहदी हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही

इमाम मेहदी का ज़हूर ख़ानाकाबा से होगा! (हदीस)
हज्र अस्वद ख़ाना काबा में नस्ब है, इस में तस्वीरे गौहर शाही नमूदार हो चुकी है!
ये भी हज़रत गौहर शाही के मेहदी होने की निशानी है!

मल्फ़ूज़ाते मेहदी

-: मेहदी फाउंडेशन इंटरनेशनल :-

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही

इमाम मेहदी अल्मुंतज़िर

रियाज़ अहमद गौहर शाही

ला इलाहा इल्लल्लाह मेहदी ख़लीफ़ा अल्लाह

''मल्फ़ूज़ाते मेहदी''

चाँद में शबीहे गौहर शाही नुमायाँ है

मेह..............चाँद...............मेहदी.....चाँद वाला

इमाम मेहदी अलै. का चाँद में चेहरा होगा। इमाम जाफ़र सादिक़

मुरत्तब करदः

मुहम्मद यूनुस अल्गौहर

मेहदी फाउंडेशन इंटरनेशनल

Email address: mehdi_foundation@hotmail.com

इब्तिदाइया

ज़ाते गौहर शाही का मरतबा मेहदी, एक मुजस्सम हक़ीकत

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही फ़रमाते हैं हमें लाल बाग़ में ही अल्लाह की जानिब से बता दिया गया था कि हम इमाम मेहदी हैं, तब ही तो एक रोज़ ग़ौसुलआज़म के पोते हयातुल अमीर, हमसे मुलाक़ात करने के लिए आए और ग़ौसुलआज़म का सलाम पहुँचाया। आज से तक़रीबन 25 साल क़ब्ल ही अल्लाह अ़ज़्ज़ोजल की जानिब से इशारा मिल गया था कि जब मुनासिब समझो, एलाने मेहदी कर दो। हम ने एक साज़गार वक़्त का इंतेज़ार किया, और आहिस्ता आहिस्ता लोगों के कुलूब में नूरे अल्लाह का सिलसिला शुरु किया ताकि पहचाने मेहदी में कामयाबी हो सके। जिस तरह इस्म अल्लाह का फ़ैज़ दौरे गौहर शाही में तक़सीम किया गया, इसकी तारीख़ में नज़ीर नहीं मिलती, औलिया अल्लाह की एक कसीर तअ़दाद, इस बात पर नालाँ थी कि हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही ने हर कस व नाकस को ज़िकरे क़ल्ब की दौलत से नवाज़ा और इस तरह बेक़दरी हो रही है। जबकि इसी ज़िकरे क़ल्ब और सफ़ाए क़ल्ब की ख़ातिर हर दौर में औलिया ने जंगलों में रहकर सबर आज़मा चिल्ले और मुजाहिदे किए और बहुत मेहनत के बाद ज़िकरे क़ल्ब की अज़ीम दौलत को हासिल कर पाए। जब अल्लाह से दर्याफ़्त किया गया कि हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही ने फ़ासिक़ व फ़ाजिर और बेअ़मलों को क्यों इस क़दर नवाज़ा तो अल्लाह का जवाब आया कि ये रिआ़यत इमाम मेहदी अलै. के लिए है।

हज़रत सयैदना रियाज़ अहमद गौहर शाही के मंज़रे आ़म पर आते ही तक़रीबन हर रूहानी सिलसिले के लोग, फ़ैज़ ए बातिन के लिए रूजू हुए, और आप ने बिला तफ़रीक़, चिश्ती, क़ादरी, सुहरवर्दी, नक़्शबंदी, अल्ग़रज़ हर सिलसिले वाले को बग़ैर बैत व अ़हदो पैमां ज़िकरे क़ल्ब और दीगर रूहानी मुक़ामात का फ़ैज़ दिया। इस तरह तमाम रूहानी सलासल, फ़ैज़े गौहर शाही में ज़म हो गए। फिर एक दिन, हज़रत गौहर शाही ने बैरुने मुमालिक का क़सद किया और यूं फ़ैज़े गौहर शाही सलासले रूहानिया से परवाज़ करता दीगर मज़ाहिब तक पहुँच गया, और फिर हर मज़हब के मानने वालों के कुलूब इस्म ए अल्लाह से मुनव्वर होना शुरु हो गए 1994 ईस्वी में दौराए नारवे के मौक़ा पर दुनिया को यह नवीद सुनाइ गई कि चाँद पर इमाम मेहदी अलै. का चेहरा नज़र आ रहा है, तस्दीक़ के बाद मालूम हुआ कि चाँद पर ज़ाहिर होने वाला यह चेहरा सयैदना रियाज़ अहमद गौहर शाही का है, फिर तवातर के साथ मिनजानिबे अल्लाह निशानियों का ज़ुहूर शुरु हो गया, हज्र अस्वद, शिव मंदिर, मस्जिद, मंदिर, कलीसाओं, सूरज, मरीख़, सितारों और दीगर लातादाद मुक़ामात पर तस्वीरे गौहर शाही का ज़ुहूर हो गया, और दुनिया ने अपने मसीहा, मेहदी और कल्कि अवतार को पहचान लिया। फिर वो मुबारक लम्हा आ गया जिस का अज़ल से मुश्ताक़ रुहों को इंतज़ार था, हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही ने इमाम मेहदी की सबसे मुस्तनद निशानी फ़ैज़े इश्क़े इलाही की सूरत अ़ता करी, और इस तरह ‘‘दीन ए इलाही’’ मनज़रे आ़म पर आ गया। इस तरह पहले सलासले रूहानिया और फिर तमाम मज़ाहिब फ़ैज़े गौहर शाही में ज़म होकर दीने इलाही क़रार पाए। इस किताब **दीन ए इलाही** के मंज़रेआ़म पर आते ही इमाम मेहदी के बारे में वो पेशगोईयां पूरी होना शुरु हो गईं जिन का मुतअ़द्दिद बार हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही ने तज़करा फ़रमाया। हज़रत गौहर शाही ने फ़रमाया था कि सब से पहले उलमाए सू , इमाम मेहदी की मुख़ालिफ़त करेंगे, इसके बाद पुलिस उन के पीछे पड़ जाएगी, अगर वो पुलिस से भी बच गए तो इस्लामी मुमालिक की हुकूमतें उनके पीछे पड़ जाएंगी, क्योंकि नजूमियों की पेशनगोई है कि इमाम मेहदी उनकी सलतनत छीन लेगा, इस लिए ये

हुकूमतें इमाम मेहदी के क़त्ल के दर पे होगीं। और तारीख़ गवाह है कि सब से पहले उलमाए सू ने हज़रत गौहर शाही की मुख़ालिफ़त करी और फिर फ़िरक़ा ए वहाबिया की ईमा पर झूटे मुक़दमों के सिलसिले में पुलिस हज़रत गौहर शाही के पीछे पड़ गई, और इस के बाद हुकूमते सऊदी अरब ने किराए के क़ातिल उनके पीछे लगा दिए। देवबन्दी और वहाबियों ने हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही के सिर की क़ीमत लगा दी, नऊज़ोबिल्लाह। एक मरतबा आप की रिहाइशगाह कोटरी में आप पर हैन्ड ग्रेनेड से हमला किया गया, मानचेस्टर में आप की रिहाइशगाह पर बम फेंका गया। कभी आप की रिहाइशगाह को आग लगा दी गई। लेकिन हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही ने हमेशा अपनी शाने क़रीमी से इन नाआक़बत अंदेश अ़नासिर को दरगुज़र और नज़र अंदाज़ किया। क़िब्ला गौहर शाही ने यही फ़रमाया कि : क्या ग़म है अगर सारी हो दुनिया भी मुख़ालिफ़......काफ़ी है अगर एक ख़ुदा मेरे लिए है। मरतबा ए मेहदी के मुताल्लिक़ क़िब्ला गौहर शाही फ़रमाते हैं कि इमाम मेहदी खुद अपनी ज़ुबान मुबारक से नहीं फ़रमाएंगें कि वो इमाम मेहदी हैं बल्कि रोशन ज़मीर इन्हें पहचानेंगें और फिर इस हक़ का ऐलान करेंगे और आज का दौर आप के फ़रमान का मिसादाक़ है। यही वजह है कि जिन को आपने रोशन ज़मीरी अ़ता फ़रमाई वही नुफ़ूस आज पहचान लेने के बाद आपके मरतबाए मेहदी का प्रचार कर रहे हैं। अगर किसी शख़्स को क़िब्ला गौहर शाही के मरतबा मेहदी को समझने में दुश्वारी महसूस हो तो चाँद, हज्र अस्वद, सूरज और दीगर कई मुक़ामात पर ज़ाहिर होने वाली तसावीर को देखे और ज़िकरे अल्लाह की कसरत से क़ल्ब में नूर पैदा करे ताकि तोफ़ीक़े बिल्लाह हासिल हो और मेहदी अलै. के हक़ को तसलीम करने के बाद उसे हिदायते उज़्मा मयस्सर आ सके, आमीन!

हज़रत गौहर शाही का मरतबा ए मेहदी हमारे मुशाहिदात की नज़र में

हम ने ये तगोदो और जमात हज़रत गौहर शाही की मदद के लिए बनाई है क्योंकि हमारा ज़ाती तजरबा जो कि हमने अपने सीनों में हज़रत गौहर शाही की सोहबत में बैठ कर देखा और चाँद, सूरज और सितारों में हज़रत गौहर शाही की तस्वीरों की हमने तसदीक़ करी तो हम इस नतीजे पर पहुंचे कि हज़रत गौहर शाही अल्लाह की तरफ से ही भेजे गए हैं और जो निशानियां इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की हमने किताबों में पढ़ी या सुनी हैं उन से 80 फीसद हक़ीक़त हम को उन में नज़र आई है। हमारा यक़ीन है हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही इमाम मेहदी हैं। लेकिन उन के खुद ऐलान ना करने की वजह से बहुत से लोग कन्फियूज़ हैं।

हज़रत गौहर शाही कहते हैं कि

इमाम मेहदी ऐलान करे या ना करे, ख़्वाह अ़वाम में रहें या गोशानशीनी अख़्तियार करे, इमाम मेहदी वही है जो मिजानिबे अल्लाह है! इमाम मेहदी की पुश्त पर मोहरे मेहदियत होगी। जिस की पुश्त पर मोहरे मेहदियत है, वही इमाम मेहदी है। इमाम मेहदी को सख़्ती बरदाश्त करने या जेल जाने की क्या ज़रुरत है?

अगर आज दुनिया ने इमाम मेहदी को नहीं पहचाना तो एक दिन ये दुनिया इमाम मेहदी को पहचान ही लेगी। इमाम मेहदी ने ख़ामोशी इसी लिए अख़्तियार की कि उसे भी किसी उमर का इंतेज़ार है!

हम आप लोगों को हज़रत गौहर शाही को, इनकी तअ़लीमात, और इन निशानियों को परखने की दावत देते हैं कहीं ऐसा ना हो कि इनकी मुख़ालिफ़त तुम्हारे लिए बिलियम बाऊर की तरह मुसीबते ईमान बन जाए। बाज़ लोग कहते हैं कि हम हदीसों की रोशनी में इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम को पहचानेंगे जबकि कई हदीसों के अक़वाल एक दूसरे से मुख़तलिफ़ हैं, जिस की वजह से किसी ने भी किसी हदीस को मुसतनद और किसी को ज़ईफ़ क़रार दिया है। हमारे पास कोइ ऐसी हदीस नहीं है जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अ़लैहेवसल्लम के वक़्त के ज़माने का नुस्खा हो! और ये हदीसें उलमा ने ही वक़्तन फ़वक़्तन प्रेस के ज़रिए तबअ़ कराई हैं जिनमें उलमा का भी अपना किरदार और एख़्तिलाफ़ है। क़ुरान की हिफाज़त के लिए अल्लाह ने जिबराईल अलैहिस्सलाम को भेजा था ताकि शैतान आयात में कुछ रद्दोबदल ना कर सके, और ये हदीसें तो जिबराईल अलैहिस्सलाम की हाज़री के बग़ैर ही तबअ़ होती रही हैं और चूँकि इन हदीसों में इन्सानी अ़मल दख़ल भी शामिल है, लेकिन ये चाँद और सितारों पर जो रब कर निशानियां हैं इन में इन्सानियत का दख़ल नहीं है। एक क़ुरान था, लोगों ने उसकी तफ़सीरों को भी बदल कर फ़ितना पैदा कर दिया जबकि हदीसें दूसरे नम्बर पर आतीं हैं, शायद इसी वक़्त के लिए अ़ल्लामा इक़बाल ने कहा था

गया दौरे हदीसे लन्तरानी

अब आप खुद अंदाज़ा लगाएं कि आप इंसानियत की आवाज़ को
तरजीह देंगे या अल्लाह की निशानियों को, जो कि हर क़िस्म के
इसतेदराज़ और बनावट या आ़मेज़िश से मुबर्रा हैं।

लोग सोचते हैं कि चाँद, सूरज, सितारों पर इस से पहले ना ही किसी नबी और ना ही किसी वली की तस्वीर आई, अब ऐसा क्योंकर हुआ। लेकिन मसला ये है कि इस से पहले इमाम मेहदी आया ही नहीं कि उस की पहचान या तसलीम के लिए कोई किताब या कोई निशानी आती। अरबी हदीसों में भी साफ तौर पर शुरु से ही इमामे ज़माना को इमाम मेहदी के खास लक़ब से नवाज़ा गया जिस का मतलब ''चाँद वाला'' है। ना कि महदी कहा गया जिस का मतलब ''हिदायत से'' है। लोगों की हुज्जत खत्म करने के लिए दूसरे सैयारों और मक़ामात पर भी इमाम मेहदी की निशानदेही की गई है। सादात के घर पैदा होना या फ़ातमी होना बड़ी बात नहीं क्यों कि ऐसे लोग आ़म हैं, महफिले हुज़ूरी तक रसाई या लौहे महफूज़ तक पहुँच, ये भी बड़ी बात नहीं क्योंकि इस का मलका भी कई लोगों को हासिल है, अल्लाह से हमकलाम होना या अल्लाह का दीदार, ये भी कोई बड़ी बात नहीं क्यों कि ये भी कई वलियों को हासिल है लेकिन इन मरातिब के बावजूद कुल काएनात में किसी एक हस्ती को मिन्जानिब अल्लाह उन जगहों पर मुतारूफ़ कराना बड़ी बात है जहां मुखतलिफ़ मज़ाहिब के सिर झुकते हैं।

एहले इल्म ने जब क़ुरान का मुतालिया किया तो उन्हों ने बरमला कहा कि ये किसी इन्सान के बस की बात नहीं है, ये रब की तरफ से ही उतरी हुई किताब है, जिस की वजह से हुज़ूर पाक स० पर ईमान ले आए। अब चूँकि नबूवत ख़त्म है, किसी किताब को आना भी नहीं है तो फिर एहले इल्म रब की निशानियों के ज़रिए ही इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम को पहचानेंगे। आसमानी किताबें मुसतक़बिल में आने वाली किताबों के लिए इशारे करती रहीं इसी तरह आख़री किताब क़ुरान ने भी अल्लाह की निशानियों के इशारे कर दिए हैं।

इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम
का तआरुफ़ मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब की रु से

1) हिन्दुओं के मज़हब के मुताबिक़ आख़री ज़माना में कल्कि अवतार आएंगे जो तमाम दुनिया में हिन्दू मज़हब नाफिज़ कर देंगें।

2) ईसाइयों के मज़हब के मुताबिक़ यीसू मसीह दोबारा आऐंगें जब कि योहना ईसा अलै. के तआ़रुफ़ के लिए आएंगे जैसा कि पहले हुआ।

3) बुद्ध मत के मुताबिक़ महा बुद्धा ने आना है।

4) यहूदी मज़हब के मुताबिक़ मसीहा ने आना है।

5) सिक्ख मज़हब वाले भी कल्कि अवतार के इन्तज़ार में हैं।

6) मुसलमान इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की आमद के क़ायेल हैं।

दर हक़ीकत आने वाला किसी एक मज़हब से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से सब के लिए होगा, वो सब को अल्लाह की पहचान अ़ता करेगा, और तमाम मज़ाहिब एक हो जाएंगे। वो अल्लाह का ज़ाती नूर इन्सानों के दिलों में अपनी नज़र से बांटेगा तो तमाम लोग मोवह्हिद हो जाएंगे यानी एक अल्लाह के नाम पर जमा हो जाएंगे।

सबूते इमाम मेहदी अलै.

1) इमाम मेहदी अलै. का चेहरा चाँद में नज़र आएगा। (इमाम जाफ़र सादिक़)

2) इमाम मेहदी अलै. की पुश्त मुबारक पर मोहरे मेहदियत होगी। (हज़रत अली अ.)

3) इमाम मेहदी अलै. काबातुल्लाह में ज़ाहिर होंगे यानी हज्र अस्वद इमाम मेहदी अलै. की शनाख़्त में मददगार साबित होगा।

4) इमाम मेहदी अलै. तमाम मज़ाहिब और फिरकों को इस्मे ज़ात अल्लाह पर इक्ठा करेंगे (बहवाला इर्जहुल्मतालिब)

5) इमाम मेहदी अलै. तमाम इन्सानों को अल्लाह का ज़िक्र और इश्क़ अ़ता फ़रमाएंगे। (मौलाना नजमुलहसन करारवी)

6) हज़रत ग़ौसुल आज़म रह. ने अपने पोते हज़रत जमालुल्लाह अलमारुफ़ हयातुल अमीर से फ़रमाया कि इमाम मेहदी अलै. के ज़माने तक ज़िन्दा रहना और इमाम मेहदी अलै. को मेरा सलाम कहना। (हज़रत ग़ौसुल आज़म)

7) इमाम मेहदी अलै. सन् 1380 हिजरी में ज़ाहिर होंगे (शाह नेमतुल्ला वली क़ाज़मी)

8) इमाम मेहदी अलै. सन् 1900 ई. और सन् 1500 हिजरी में ज़ाहिर होंगे (हज़रत इमाम अहमद रज़ा रह.)

9) इमाम मेहदी अलै. इल्मे लदुन्नी से भरपूर होंगे (पीर मेहर अ़ली शाह रह.)

10) इमाम मेहदी अलै. बराहे रास्त हुज़ूर अकरम सल. से एहकाम लेकर नाफिज़ फ़रमाएंगे। (हज़रत इमाम अहमद रज़ा रह.)

11) इमाम मेहदी अलै. नमाज़ इस तरीक़े पर अदा फ़रमाएंगे जो आपको हुजूर सल. बराहे रास्त तालीम फ़रमाएंगे। (हज़रत इमाम अहमद रज़ा रह.)

12) इमाम मेहदी अलै. के पास हुजूर अकरम सल. का कुरता, तलवार और झंडा होगा। (पीर मेहर अली शाह रह. रह.)

13) इमाम मेहदी अलै. के पास ताबूते सकीना होगा जिसे देख कर यहूदी ईमान लाएंगे मगर चंद। (पीर मेहर अली शाह रह. रह.)

14) इमाम मेहदी अलै. ख़ाना काबा के खज़ाना को निकाल कर तक़सीम फरमसएंगे। (पीर मेहर अली शाह रह. रह.)

15) अल्लाह तआ़ाला के निज़ाम हाए तक़वीन से मुताल्लिक गुफतगू के दौरान एक मरतबा हुज़ूर बाबा रह. ने एक बच्चा की विलादत की पेशनगोइ की जिस को जून 1960 में पैदा होना था, जून 1960 की तारीख आई तो मैंने दोबारा इस्तेफसार किया जिस के जवाब में मुझे बताया गया कि वो बच्चा आलमे अरवाह से आलमे नासूत में आ गया है, जब ये ४० साल की उमर को पहुँचेगा तो दुनिया के तमाम मज़ाहिब में इन्क़लाब बरपा कर देगा, मज़ाहिब की गिरिफ्त टूट जाएगी और वो मज़हब बाकी रहेगा जिस को अल्लाह ने दीने हनीफ़ क़रार दिया है। (ये पेशनगोई इमाम मेहदी अलै. के लिए ही की गई थी)

क़लंदर बाबा औलिया

16) सिक्ख मज़हब की किताब गुरुग्रंथ में है कि कल्कि अवतार का चेहरा चाँद में नज़र आएगा।

लोब सिंह रंपा की पेशनगोइयां

लोब सिंघ रंपा बुद्ध मत के पैरोकार थे। उन्होंने मुख़तलिफ़ मौज़ूआ़त पर कई किताबें लिखीं। इनकी एक किताब (Chapter of Life) ''ज़िन्दगी के अबवाब'' में बहुत सी पेशनगोइयां की हैं। ये किताब पहली बार 1967 में तबअ़ की गई, इस किताब के बारह अबवाब में से दो बाब में आइंदह तबदीलियों का मुफ़स्सल ज़िक्र है। ज़ेरे नज़र इक़्तेबास उसी किताब का है। वो लिखते हैं कि इस ज़मीन पर लाखों बरसों से आबाद मुख़्तलिफ़ कौमें रहीं हैं कुछ अच्छे और ख़राब लोग आए और चले गए। ज़मीन पर मुख़्तलिफ़ अदवार आए। हर दौर 864000 साल का था। दुनिया (12) बुरजो के हिसाब से (Signs of Zodiac) से है। ये (11) ग्यारवां (Star) का ज़माना है। अब 2000 ई. में ये दौर भी एख़्तेताम पज़ीर होगा और दुनिया तबाही से दोचार होगी। मगर ये दुनिया अपनी तबाही के बाद सुनहरी दौर शुरु करेगी और एक आ़लमी रहनुमां इसकी रहबरी करेगा। वो शख़्स 1985 ई. में पैदा होगा। और इसका वतन मश्रिक़े वुस्ता में है। इसके दो मुआ़विन (Assistant) भी हैं। जो 1941 ई. में पैदा हो चुके हैं। आ़लमी लीडर की खुसूसी तालीमो तर्बियत होगी और वो 2005 ई. में मंज़रेआ़म पर आएगा और ख़ुसूसी तौर पर जो लोग ख़ुदा की ज़ात के मुंकिर हैं इन की तर्बियत कर के ख़ुदा तआ़ाला की अज़मत का एअ़तराफ़ कराएगा। वो शख़्स दीन की तबलीग़ करेगा और हिजरत भी करता रहेगा। अल्लाह तआ़ाला की ज़ात इसकी हिफ़ाज़त करेगी। इस की आमद के बाद अहम वाक़िआ़त रोनुमां होंगे और तक़रीबन 2000 ई. साल तक इसके

रहनुमां उसूलों के मुताबिक़ तरक्की होगी। रंपा अपनी किताब में लिखते हैं कि वो आ़लमी रहनुमां और इनके नाएबीन के बारे में मज़ीद इस लिए नहीं बताना चाहता कि सारी दुनिया खुसूसन मीडिया की तवज्जो इसकी तरफ मब्ज़ूल हो जाएगी। End After Chapter में लिखते हैं कि 1981 ई. के बाद दुनिया में दरजाए हरारत बतद्रीज बढ़ना शुरु होगा। बारिश बहुत कम होगी और इससे तबाही फैलेगी, क़हत साली बढ़ती जाएगी। ज़ेरे ज़मीन पानी कम होता जाएगा। 2000 ई. के बाद एक जदीद क़िस्म का कम्यूनिज़म इटली पर कब्ज़ा करेगा। यूरोप में ईसाइ मज़हब तक़रीबन ख़त्म हो जाएगा। पादरी और बिशप मारे जाएंगे। दिफ़ाई ज़रुरत के तहत अमरीका और इंग्लैंड आपस में इत्तेहाद करेंगे। इंग्लैंड, अमरीका के मातहत होकर इसका सूबा बन जाएगा। इस का गवर्नर एक अमरीकी होगा।

नासटरोडेम्स की पेशनगोइयां

नासटरोडेम्स 16 सितंबर 1503 ई. में फ्रांस में पैदा हुआ, इस का तअ़ल्लुक कैथोलिक फिरके़ से था। इस ने इल्मे नजूम की तालीम हासिल की मगर इस में अज़खुद ऐसी सलाहियतें मौजूद थीं जिस ने इस के इल्म को दवाम बख़्शा। नासटरोडेम्स ने ऐसी बहुत सी पेशनगोइयां कीं जो हर्फ बाहर्फ सही साबित हुईं और अगर फर्क पड़ा तो कुछ तारीखों का, ये तमाम पेशनगोइयां अशआ़र और क़तआ़त में की गईं हैं इसकी तहरीरों से ये ज़ाहिर होता है कि 2000 ई. के बाद कुछ ग़ैर मामूली हालात पेश आ सकते हैं। वो तहरीर करते हैं कि 2000 ई. के बाद दुनिया में बेचैनी और अफ़रा तफ़री अपने उरुज पर पहुँच जाएगी फिर साइंसी तरक्की का ज़वाल किसी भयानक जंग से होगा। जिससे तरक्की या तहज़ीब एख़्तेताम पज़ेर होगी। 2000 ई. के बाद एक शख़्स अपनी इल्मी क़ाबलीयत के बलबूते पर पूरी दुनिया पर हुकमरानी करेगा। उन्होंने ज़मीन पर पानी के ज़रिए तबाही का अंदेशा ज़ाहिर किया है। एक जगह उन्हों ने 1999 ई. के आख़िर में अमेरिका के ऐटमी पलांट पर हमले का अंदेशा ज़ाहिर किया है जो किसी वसीअ़ जंग का नुक़्ताए आग़ाज़ होगा। एक जगह वो तहरीर करते हैं कि इस सदी के एख़्तेताम और आने वाली सदी के इब्तेदाई दिनों में एक आ़लमी मज़हब ज़ाहिर होगा, इसके लिए नासटरोडेम्स ने 2 फरवरी का वक़्त बताया है। इस नए मज़हब को लेकर उठने वाला फर्द मज़हबी, रूहानी और साइंसी ज़ेहन वाला होगा।

हिन्दुओं की एक किताब ऋगुवेद से लिया गया एक इक़तेबास

अज़ीम मुहम्मद की कुव्वत में इज़ाफ़े के लिए और पुशान जो कि अज़ीम हुक्मरान है इसके लिए हम नअ़त बयान करते हैं। ऐ इन्तहाई करीम खुदा हमें तमाम मुसीबतों से निजात दे और दुशवार गुज़ार रास्तों से हमारा रथ पार करादे (ग्रंथ) ऋगुवेद (1-106-4) पुशान से मुराद (मेहदी अलै.)

इमाम मेहदी अलै. और कुर्आनी आयात

1) सूरत अल्नूर। आयत 55, पारा 18 तर्जुमाः ‘‘अल्लाह ने वादा दिया उन लोगों को जो तुममें से ईमान लाए और अच्छे काम किए कि ज़रुर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा जैसी उनसे पहलों को दी और ज़रुर इनके लिए जमा देगा इनका वो दीन जो इनके लिए पसंद फ़रमाया है और ज़रुर इनके अगले ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा। मेरी ईबादत करेंगे मेरा शरीक किसी को ना ठहराएंगे और जो इसके बाद नाशुकरी करेगा तो वो ही लोग फासिक़ हैं’’

तफ़सीरः इस आयत की तफ़सीर यह है कि यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने दीने हक़ दीने इलाही को हुज़ूर सल. की हयात ए ज़ाहिरी के ज़माने में और खुलफ़ाए राशदीन के दौर में अज़ीम ग़लबा अ़ता फ़रमाया। इनके बाद भी आ़दिल खुलफ़ा ने इसलाम की तरवीज की। इसी तरह बारह हक़ के खुलफ़ा होंगे जिन के बारे में तफ़सीर इब्ने कसीर में वज़ाहत से लिखा गया है और अ़ल्लामा इबने कसीर ये भी फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम भी इन खुलफ़ा में शामिल हैं। आप तमाम ज़मीन को अ़दलो इंसाफ़ से भर देंगे। जिस तरह वो ज़ुल्म ओ नाइंसाफ़ी से भर गई होगी। इन बारह खुल्फ़ा (बशमूल हज़रत इमाम मेहदी अलै.) की बशारत अगली किताबों में भी मौजूद है। (तफ़सीर इबने कसीर। जिल्द 3 आयत मज़कूरा बाला)

2) इस दिन क़यामत को हम तमाम इन्सानों को इनके इमाम के साथ बुलाएंगे..........और जो इस दुनिया में अंधा हुआ पस वो आख़िरत में भी अंधा और गुमराह है। (आयत 71, 72. सूरत बनी इसराईल। पारः नम्बर 15)

3) बेशक हम ही मुरदों को ज़िन्दा करते हैं और हम लिखते हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो इनके बाद है और हर चीज़ को हमने इमाम में जमा कर दिया जो ज़ाहिर करने वाला है। (आयत 12, सूरत यासीन, पारः नम्बर 22)

इमाम मेहदी अलै. और अहादीस

1) हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ी. फ़रमाते हैं कि रसूल सल. ने फ़रमाया कि मेहदी अलै. मुझ से हैं (यानी मेरे मुक़र्रिब उम्मती) चौड़ी पेशानी वाले, ऊंची नाक वाले, ज़मीन को अ़दलो इंसाफ से भर देंगे जैसे वो ज़ुल्मों सितम से भरी हुई थी, सात साल हुकूमत करेंगे (रवाह अबूदाऊद व मिशकात)

2) हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी. फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ने फ़रमाया कि हज़रत इमाम मेहदी अलै. मेरी औलाद में से एक मर्द होगा जिस का चेहरा इस सितारे की मानिंद होगा जो मोती की तरह चमक रहा है। (अलहावी लिल्फ़तावा। जिल्द 2)

3) हज़रत अर्ता से मरवी है कि साहिबे लौलाक सल. के घराने से इमाम मेहदी अलै. तशरीफ़ लाएंगे। वो सीरतन बहुत अच्छे होंगे, कैसर के शहर में जिहाद करेंगे और उम्मते मुहम्मद सल. में वो आख़री अमीर होंगे, आप अलै. के ज़माने में दज्जाल का खुरुज होगा और आप के ज़माने में ईसा इब्ने मरियम अलै. तशरीफ़ लाएंगे। (अलहावी लिल्फतावा। जिल्द 2)

4) हज़रत अ़ली इब्ने अबीतालिब फ़रमाते हैं कि इमाम मेहदी अलै. घनी दाढ़ी वाले, सुरमगीं आँखों वाले, चमकीले दाँतों वाले और आप के चेहरे में स्याह तिल होगा और आप के कांधे में नबी करीम सल. की अ़लामते मुबारिका होगी।

इमाम मेहदी अलै. बमुताबिक़ उलमाए कराम

1) हज़रत इमाम मेहदी अलै. की इक़्तेदा दरअसल हुज़ूर की इक़्तेदा है हज़रत इमाम मेहदी अलै. हुज़ूर अकरम सल. की सूरते जामिआ़ कमालिया में ज़ाहिर होंगे (अ़ल्लामा फैज़ अहमद अवैसी व अ़ल्लामा मुहम्मद इस्माईल हक्क़ी)

2) एक वक़्त आएगा जब इमाम मेहदी अलै. भी पैदा होंगे और उस वक़्त जो उनकी इत्तेबा नहीं करेगा और इमाम पहचान कर इनकी पैरवी नहीं करेगा वो जाहिलियत की मौत मरेगा। (मौलवी क़ासिम नानोतवी)

3) इमाम मेहदी अलै. के सरे अनवर पर बादल साया करेगा, इसमें से एक पुकारने वाला पुकारेगा, ये मेहदी अलै. अल्लाह का ख़लीफ़ा है इसकी इत्तेबा करो (ये मंज़र रोशनज़मीरों के लिए होगा) (पीर मेहर अली शाह रह. रह.)

4) दरिया इनके लिए ऐसे फट जाएंगे जैसे बनी इसराईल के लिए फट गया था। (पीर मेहर अली शाह रह. रह.)

5) मेरे ख़याल में ख़िलाफ़ते राशिदा अब इमाम मेहदी अलै. ही क़ायम करेंगे। (अहमद रज़ा खां बरेलवी)

6) रिसाला जज़ीरा ए ख़िज़रा बहवाला अहादीस आले मुहम्मद सल. मरकूम है कि हज़रत इमाम मेहदी अलै. से हर मोमिन की मुलाक़ात होती है ये और बात है कि मोमनीन इन्हें मस्लेहते खुदावंदी की बिना पर इस तरह ना पहचान सकें जिस तरह पहचानना चाहिए। (मौलाना सैयद नजमुल हसन करारवी)

अज़्मते इमाम मेहदी अलै.

1) ख़ाकसार इसक़दर ज़ाहिर करता है कि हर मक़ाम के लिए उलूम व मआ़रूफ़ जुदा हैं और अहवाल व मवाजीद जुदा, किसी मक़ाम ज़िक्र व तवज्जह मुनासिब है और किसी मक़ाम में तिलावत और नमाज़ मुनासिब, कोई मक़ाम जज़्ब से मख़सूस है और कोई मक़ाम सलूक के मुनासिब और किसी मक़ाम में ये दोनों दौलतें मिली हुई हैं और कोई मक़ाम ऐसा है कि जज़्बा और सलूक की दोनों जेहतों से जुदा है। ना जज़्बा को इस से इलाक़ा और ना सलूक से इस को तअ़ल्लुक। ये मक़ाम निहायत अ़जीब है। हुज़ूर नबी करीम सल. के असहाब इस मक़ाम के साथ मुम्ताज़ और इस बड़ी दौलत से मुशर्रफ़ हैं। इस मक़ाम वाले के लिए दूसरे मक़ामात वालों से पूरा पूरा इम्तियाज़ है ओर एक दूसरे के साथ बहुत कम मुशाबिहत रखते हैं। बर्ख़लाफ दूसरे मक़ामात वालों के कि एक दूसरे के साथ बहुत कम

मुशाबिहत रखते हैं ख़्वाह वह मुशाबिहत किसी वजह से हो ये निस्बत असहाबा कराम के बाद हज़रत इमाम मेहदी अलै. में पूरे तौर पर ज़हूर पाएगी इन्शा अल्लाह तआ़ला।

2) मन्कूल है कि हज़रत इमाम मेहदी अलै. अपनी सलतनत के ज़माना में जब दीन को रवाज देंगे और सुन्नत को ज़िन्दा फ़रमाएंगे तो मदीना का आ़लिम जिसने बिदअ़त पर अ़मल करने को अपनी आ़दत बना लिया होगा और उसको अहसन ख़्याल करके दीन के साथ मिला लिया होगा, तअ़ज्जुब से कहेगा कि इस शख़्स ने हमारे दीन को दूर कर दिया है और हमारे मज़हबो मिल्लत को मार दिया और ख़राब कर दिया है। हज़रत इमाम मेहदी अलै. इस आ़लिम के क़त्ल का हुक्म फ़रमाऐंगे और हसना को सईया ख़्याल करेंगे (मक्तूबात इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी दफ़्तर अव्वल। हिस्सा चहारूम मक़तूब 255)

3) इमाम मेहदी अलै. अबुल्अअ़ला मौदूदी की नज़र में

मुसलमानों में जो लोग इमाम मेहदी अलै. की आमद के क़ायल हैं वो भी इन मुत्तजदीन से जो इसके क़ायल नहीं हैं अपनी ग़लत फ़हमियों में कुछ पीछे नहीं हैं। वो समझते हैं कि इमाम मेहदी अलै. कोई अगले वक़्तों के मोलवियाना व सूफ़ियाना वज़अ़ क़तअ़ के आदमी होंगे तस्बीह हाथ में लिए यकायक किसी मदरसा या ख़ानक़ाह के हुजरे से बरामद होंगे। आते ही अनल्मेहदी का ऐलान करेंगे उलमा व मशायेख़ किताबें लिए हुए पहुँच जाएंगे और लिखी हुई अ़लामतों से इनके जिस्म की साख़्त का मुक़ाबिला करके उन्हें शनाख़्त कर लेंगे, फिर बैअ़त होगी और ऐलाने जिहाद कर दिया जाएगा। इलल्आख़िर।

मेहदी अलै. के मुतल्लिक़ मुअल्लिफ़ का अन्दाज़ा: अक़ीदा ए मेहदी के मुतल्लिक़ आ़म लोगों के तसव्वुरात कुछ इसी क़िस्म के हैं मगर मैं जो कुछ समझ रहा हूं इससे मुझको मुआ़मिला बिलकुल बर्अ़क्स नज़र आता है। मेरा अन्दाज़ा यह है कि आने वाला अपने ज़माने में बिल्कुल जदीद तरीन तर्ज़ का लीडर होगा। वक़्त के तमाम उलूम जदीदह पर इसको मुज्तहिदाना बसीरत हासिल होगी। ज़िन्दगी के सारे मसायिले मुअ़म्मा को वो खूब समझता होगा। अक़ली और ज़ेहनी रियासत सियासी तदब्बुर और जंगी महारत के ऐतबार से वो तमाम दुनिया पर अपना सिक्का जमा देगा और अपने अ़हद के तमाम जदीदों से बढ़ कर जदीद साबित होगा मुझे अन्देशा है कि इसकी जिद्दतों के ख़िलाफ़ मोलवी और सूफ़ी साहिबान ही सबसे पहले शोरिशें बरपा करेंगे। फिर मुझे यह भी उम्मीद नहीं कि अपनी जिस्मानी साख़्त में वो आ़म इन्सानों से कुछ बहुत मुख़्तलिफ़ होगा कि इसकी अ़लामतों से इसे ताड़ लिया जाए। ना मैं यह तवक्क़ो रखता हूं कि वो अपने मेहदी होने का ऐलान करेंगे। (इलल्आख़िर)

मेहदी के काम की नुऐयत

मैं समझता हूं कि इन्क़लाबी लीडर को दुनिया में जिस तरह शदीद जद्दोजेहद और कश्मोकश के मराहिल से गुज़रना पड़ता है इन्हीं मरहलों से मेहदी अलै. को भी गुज़रना होगा। वो ख़ालिस इस्लाम की बुनयादों पर एक नया मज़हबे फ़िक्र पैदा करेगा। ज़ेहनियतों को बदलेगा एक ज़बरदस्त तहरीक उठाएगा जो बैयक वक़्त तहज़ीबी भी होगी और सियासी भी। जिहालियत तमाम ताक़तों के साथ इसको कुचलने की कोशिश करेगी मगर बिल्आख़िर वो जाहिली इक़्तेदार को उलट कर फेंक देगा और एक ऐसा ज़बरदस्त इस्लामी स्टेट क़ायम

करेगा जिसमें एक तरफ़ इस्लाम की पूरी रुह कारफ़रमा होगी और दूसरी तरफ़ साइंटिफिक तरक्क़ी औजे कमाल पर पहुंच जाएगी जैसा कि हदीस में है कि इसकी हुकूमत से आसमान वाले भी राज़ी होंगे और ज़मीन वाले भी, आसमान दिल खोल कर अपनी बरकतों की बारिश करेगा और ज़मीन अपने पेट के सारे ख़ज़ाने उगल देगी। (सीरते सर्वरे आ़लम जिल्द अव्वल, बाब 11, फ़सल 2, उनवान सिलसिला तज्दीदे दीन अज़ मौलाना मौदूदी)

4) आला हज़रत शाह अहमद रज़ा खां बरेलवी रह. का इर्शाद

अर्ज़ : हज़रत इमाम मेहदी अलै. हैं?

इर्शाद : मगर शेख अकबर मुहियुद्दीन इबने अरबी रह. फ़रमाते हैं कि इन्हें इज्तेहाद की इजाज़त ना होगी। हुज़ूर से तलक्क़ी जुमला एहकाम करेंगे और इनपर अ़मल फ़रमाऐंगे।

अर्ज़ः नमाज़ किस तरीक़े पर पढ़ेंगे? इर्शाद : तरीक़ाए हनफ़िया के मुताबिक़ ना यह कि मुक़ल्लिदे हनफ़ी होंगे बल्कि यूंकि सैयदे आ़लम सल. इसी तरह फ़रमाएंगे, इस दिन खुल जाएगा कि अल्लाह और रसूल को सब से ज़्यादा पसंद मज़हबे हनफ़ी है अगर वो मुज्तहिद हैं तो जुमला मसाइल में इनका इज्तेहाद वरना हुज़ूरे अक़दस सल. का इर्शाद मुताबिक़ मज़हब इमाम आज़म होगा। इस ख़याल से बाज़ अकाबिर के क़लम से निकला कि वो हनफ़ीयुल्मज़हब होंगे बल्कि यही लफ्ज़ मआ़ज़ल्लाह सैयदना ईसा अलै. की निसबत सादिर हो गया हाशा कि नबीयुल्लाह किसी इमाम की तक़लीद फर्माए बल्कि वही है कि इनके अ़मल के मुताबिक़ अ़मल मज़हबे हनफ़ी की सब से क़ामिल्तर तसवीब साबित होगी। ग़र्ज़ इनके ज़माने में तमाम मज़ाहिब मुनक़ता हो जाएंगे और सिर्फ मसाइले मज़हबे हनफ़ी बाक़ी रहेंगे।

इमाम मेहदी अलै. और गौहर शाही

1) हज़रत इमाम मेहदी अलै. का चेहरा चाँद में नज़र आएगा। (इमाम जाफर सादिक़)

हज़रत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही की शबीह चाँद पर नुमायां तौर पर मौजूद है, जो आसानी से देखी जा सकती है।

2) इमाम मेहदी अलै. की पुश्त मुबारक पर मोहरे मेहदियत होगी। (हज़रत अली रज़ी.)

हज़रत व सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही की पुश्त मुबारक पर मोहरे मेहदियत मौजूद है जिस का ज़ाहिरी सबूत आप की अंगुश्त मुबारक पर इस्मे ज़ात अल्लाह और बाएं हाथ में इस्मे मुहम्मद वाज़ेह तौर पर मौजूद है।

3) इमाम मेहदी अलै. काबातुल्ला में ज़ाहिर होंगे यानी हज्र अस्वद इमाम मेहदी अलै. की शनाख़्त में मददगार साबित होगा।

काबा में नस्ब हज्र अस्वद में हज़रत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही की शबीह नुमायां तौर पर मौजूद है, जो आसानी से देखी जा सकती है।

4) इमाम मेहदी अलै. तमाम मज़ाहिब और फिरक़ों को इस्मे ज़ात अल्लाह पर इकट्ठा करेंगे (बहवाला इर्जहुल्मतालिब)

हज़रत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही की तालीमात इस्मे ज़ात का परचार करती है।

5) इमाम मेहदी अलै. तमाम इन्सानों को अल्लाह का ज़िक्र और इश्क़ अ़ता फ़रमाएंगे।
(मौलाना नजमुल हसन करारवी)

फ़रमाने गौहर शाही

जिसमें सब दरिया ज़म हो जाएं वह समुंदर कहलाता है..........और जिसमें सब दीन ज़म होकर एक होजाएं वही इश्क़ ए इलाही और दीन ए इलाही है।

6) हज़रत ग़ौसुल आज़म रह. ने अपने पोते हज़रत जमालुल्लाह अल्मारुफ़ हयातुल्अमीर से फ़रमाया कि इमाम मेहदी अलै. के ज़माने तक ज़िन्दा रहना और इमाम मेहदी अलै. को मेरा सलाम पहुँचाना। (हज़रत ग़ौसुल आज़म)

हज़रत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही की हज़रत जमालुल्लाह अल्मारुफ़ हयातुल्अमीर से मुलाक़ात हो चुकी है।

हयातुल्अमीर की गौहर शाही से मुलाक़ात लाल बाग़ में दौराने चिल्ला हुई

7) इमाम मेहदी अलै. 1380 हिजरी में ज़ाहिर होंगे। (शाह नेमतुल्लाह वली काज़मी)

इस सन् में दुनिया में मौजूद थे

8) इमाम मेहदी अलै. 1900 ई० और 1500 हिजरी में ज़ाहिर होंगे। (हज़रत इमाम अहमद रज़ा रह.)

इनकी तारीख़ पैदाइश 1941 है। (हज़रत गौहर शाही की तारीख पैदाइश 1941 है)

9) इमाम मेहदी अलै. इल्मे लुदुन्नी से भरपूर होंगे। (पीर मेहर अ़ली शाह रह.)

इन का इल्मे लुदुन्नी परखने के लिए किताब दीन ए इलाही का मुतालिआ़ करें।

10) इमाम मेहदी अलै. बराहे रास्त हुज़ूर अकरम सल. से एहकाम लेकर नाफिज़ फ़रमाएंगे। (हज़रत इमाम अहमद रज़ा रह.)

1998 ई. में बमुक़ामे कोटरी अल्मर्कज़ रूहानी हैदराबाद के तक़रीबन तमाम सहाफ़ियों की प्रेस कानफ्रेंस से ख़िताब करते हुए हज़रत गौहर शाही ने फ़रमाया : मेरी हुज़ूर सल. से बिल्मुशाफ़ा मुलाक़ात होती है और वो जो बताते हैं मैं वही लोगों को बताता हूं और इसी जुमले पर उलमा ने 295 का केस बनवा कर सज़ा दिलवाई।

11) इमाम मेहदी अलै. नमाज़ इस तरीक़े पर अदा फ़रमाएंगे जो आपको हुज़ूर सल. बराहे रास्त तालीम फ़रमाएंगे। (हज़रत इमाम अहमद रज़ा रह.)

हज़रत गौहर शाही और इनके पैरूकार हनफ़ी तरीक़े से ही नमाज़ पढ़ते हैं।

12) इमाम मेहदी अलै. के पास हुज़ूर अकरम सल. का कुरता, तलवार और झंडा होगा।
(पीर मेहर अली शाह रह. रह.)

इन का तअ़ल्लुक़ दुवाए सैफ़ी और हज्र असवद से है।

13) इमाम मेहदी अलै. के पास ताबूते सकीना होगा जिसे देख कर यहूदी ईमान लाएंगे मगर चंद। (पीर मेहर अली शाह रह.)

क्योंकि ताबूते सकीना में ऊलुलअ़ज़्म पैग़म्बरों की तस्वीरें हैं, इस में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तस्वीर भी है। मालूम हो कि ताबूते सकीना यही हज्र अस्वद है।

14) इमाम मेहदी अलै. ख़ानाकाबा के खज़ाने को निकाल कर तक़सीम फ़रमाएंगे।

(पीर मेहर अली शाह रह.)

काबातुल्लाह में कोई पैसे दफन नहीं हैं बल्कि दिलों का खज़ाना है जिस को गौहर शाही तक़सीम कर ही रहे हैं।

15) अल्लाह तआ़ला के निज़ाम हाए तक्वीन से मुतल्लिक़ गुफतगू के दौरान एक मरतबा हुज़ूर बाबा रह. ने एक बच्चा की विलादत की पेशनगोई की जिस को जून 1960 ई. में पैदा होना था, जून 1960 ई. की तारीख़ आई तो मैंने दोबारा इस्तेफसार किया जिस के जवाब में मुझे बताया गया कि वो बच्चा आ़लमे अरवाह से आ़लमे नासूत में आ गया है, जब ये 40 साल की उमर को पहुँचेगा तो दुनिया के तमाम मज़ाहिब में इन्क़लाब बरपा कर देगा, मज़ाहिब की गिरिफ्त टूट जाएगी और वो मज़हब बाकी रहेगा जिस को अल्लाह ने दीने हनीफ़ क़रार दिया है। (ये पेशनगोई इमाम मेहदी अलै. के लिए ही की गई थी) क़लंदर बाबा औलिया रह.

गौहर शाही की किताब दीन-ए-इलाही के मुताबिक़ सफा नम्बर 71 में लिखा है कि 19 साल की उमर में जुस्सा ए तौफीक़े इलाही अता हुआ। हज़रत गौहर शाही की पैदाइश से 19 साल की उमर 1960 ही बनती है, और यह सन रुह के आने के लिए है। ज़ाहिर है ऊपर से बच्चे तो नहीं आते रुह ही आती है यह जुस्सा ए तोफीक़े इलाही बच्चे में दाख़िल हुआ। आप ने 40 साल की उमर में ही तमाम मज़ाहिब में इश्क़े इलाही के मिशन की शुरुआत कर दी। सबूत के लिए www.goharshahi.com देखें।

16) सिक्ख मज़हब की किताब गुरुग्रंथ में है कि कल्कि अवतार का चेहरा चाँद में नज़र आएगा।

गौहर शाही का आलमे इन्सानियत के लिए इन्क़लाबी पैग़ाम

मुस्लिम कहता है कि मैं सब से आ़ला हूं, जब्कि यहूदी कहता है कि मेरा मक़ाम मुस्लिम से भी ऊँचा है, और ईसाइ कहता है, मैं इन दोनों से बल्कि सब मज़ाहिब वालों से बुलंद हूं, क्योंकि मैं अल्लाह के बेटे की उम्मत हूं।

लेकिन गौहर शाही कहते हैं!

सब से बेहतर और बुलन्द वही है, जिस के दिल में अल्लाह की मुहब्बत है,ख़्वाह वो किसी भी मज़हब से न हो!
ज़बान से ज़िक्र व सलात उस की इताअ़त और फ़रमाबरदारी का सबूत है, जब्कि क़ल्बी ज़िक्र अल्लाह की मुहब्बत और राबते का वसीला है।

गौहर शाही का शख़्सी तआ़रुफ़

यह वो गौहर शाही हैं जिन्होंनें तीन साल तक सेहवन शरीफ़ की पहाड़िओं और लाल बाग़ में अल्लाह के इश्क़ की ख़ातिर चिल्ला कशी करी अल्लाह को पाने की ख़ातिर दुनिया छोड़ी, फिर अल्लाह के हुक्म ही से दोबारा दुनिया में आए। लाखों दिलों में अल्लाह का ज़िक्र बसाया और लोगों को अल्लाह की मुहब्बत की तरफ़ राग़िब किया। हर मज़हब वालों ने गौहर शाही को मस्जिदों, मन्दिरों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों में रूहानी ख़िताब के लिए मद्ऊ किया और ज़िक्रे क़ल्ब हासिल किया। बेशुमार मर्द व ज़न इनकी तालीम से गुनाहों से तायेब हुए और अल्लाह की तरफ़ झुक गए बेशुमार लाइलाज मरीज़ इनके रूहानी इलाज से शिफ़ायाब हुए, फिर अल्लाह ने इन का चेहरा चाँद पर दिखाया, फिर हज्र अस्वद में भी इनकी तस्वीर ज़ाहिर हुई, पूरी दुनिया में इनकी शोहरत हो गई लेकिन कोर्चश्म मोलवियों को और वलियों से हसद व बुग्ज़ रखने वाले मुस्लमानों को यह शख़्स पसंद न आया, इन की किताबों की तहरीरों में खयानत करके इन पर कुफ़्र और वाजिबुल क़त्ल के फ़त्वे लगाए। मानचेस्टर में इनकी रिहाइश गाह पर पैट्रोल बम फेंका, कोटरी में दौराने खिताब इन पर हैंड ग्रेनेंड बम से हमला किया गया। लाखों रुपए इनके सिर की क़ीमत रखी गई। पाँच क़िस्म के संगीन झूटे मुक़दमात, अनदरुने मुल्क इनको फंसाने के लिए क़ायम किए गए।

नवाज़ शरीफ़ की वजह से हुकूमते सिंध भी शामिल हो गई थी। दो केस क़त्ल, नाजाएज़ असलेहा नाजाएज़ क़ब्ज़ा का दफ़ा भी लगाया गया। अमरीका में भी एक औरत से ज़्यादती और हब्से बेजा का मुक़दमा बनाया गया। ज़र्द सहाफ़त ने इन्हें ज़माने में खूब बदनाम किया, लेकिन आखिर में अदालतों ने शुनवाई और तहक़ीक़ात के बाद तमाम मुक़दमात झूटे क़रार देकर ख़ारिज कर दिए और अल्लाह ने अपने इस दोस्त को हर मुसीबत से बचाए रखा।

खुसूसी नोट

इन मुक़दमात की नाकामी के बाद इब्लीसियों ने दफा 295 का एक और मन्तक़ी मुक़दमा बनाया कि गौहर शाही ने नबूवत का ऐलान कर दिया है। इस में उन्हें हुकूमत के आला क़िस्म के तब्क़ा की हिमायत हासिल हो गई थी, हत्ता कि साबिक़ सदर रफीक़ तारड़ भी फ़िर्का की वजह से पार्टी बन गए थे, जिस की वजह से इन्सदादे दहशतगर्दी के जज पर दबाव की वजह से सज़ा सुनाई गई। इन्शाह अल्लाह हाई कोर्ट या सुप्रिम कोर्ट में इस झूटे केस का भी फैसला हो जाएगा।

फामूदाते गौहर शाही इमाम मेहदी अलै. के लिए

इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम तमाम मज़ाहिब की तज्दीद करेंगे

जिस तरह हुज़ूर पाक की खत्मे नबूवत के बाद मुस्लिम में मुजद्दिद आते रहे और माहोल के मुताबिक़ दीन में कुछ तज्दीद करते रहे इसी तरह इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के आने के बाद उन (मुजद्दिओं) की तज्दीद खत्म हो जाएगी और सब मज़ाहिब के मुताबिक़

इमाम मेहदी अलै. की अपनी तज्दीद होगी। कुछ किताबों में है कि वो एक नया दीन बनाएंगे।

''अगर कोई सारी उमर इबादत करता रहे, लेकिन आखिर में इमाम मेहदी और हज़रत ईसा की मुखालिफ़त कर बैठा जिन को दुनिया में दोबारा आना है (ईसा का जिस्म समेत और मेहदी अलै. का अरज़ी अरवाह के ज़रिए आना है) तो वो बिलियम बाऊर की तरह दोज़खी और इब्लीस की तरह मरदूद है। अगर कोई सारी उमर कुत्तों जैसी ज़िंदगी बसर करता रहा लेकिन आख़िर में उनका साथ और उन से मुहब्बत कर बैठा तो वो कुत्ते से हज़रत क़तमीर बनकर जन्नत में जाएगा।''

तमाम इन्सानों की अरज़ी अरवाह इस दुनिया में कई बार दूसरे जिस्मों में जन्म लेती हैं, पाकीज़ा लोगों की अरवाह पाकीज़ा जिस्मों में, जब्कि हुज़ूर पाक सल. की अरज़ी अरवाह को इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के लिए रोका हुआ था, जिस तरह आप सल. के जिस्म के किसी भी अलैहिदा हिस्से, यानी हाथ या पाओं को भी आमिना का लाल कह सकते है, इसी तरह हुज़ूर की समावी रुह के किसी अलैहिदा हिस्से को भी अब्दुल्लाह का फरज़ंद और आमिना का लाल कहा जा सकता है। एहले बैत की अरवाह भी एहले बैत में ही शामिल हैं।

दीन ए इलाही का तआ़रुफ़

हज़रत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही मद्देज़िल्लेहुल्आ़ला तमाम इन्सानियत को बिला तफ़रीक़ मज़हब व मसलक ''दीन ए इलाही'' की तालीम दे रहे हैं यह कोई नया दीन नहीं है बल्कि तमाम अम्बियाए कराम का मुशतरका दीन ''दीन ए हनीफ़'' है। इसी दीने हनीफ़ को दीने इस्लाम भी कहा गया और इसी की दावत हुज़ूर पाक ने भी दी और इसी दीने हनीफ़ को औजे कमाल तक पहुँचाया। हज़रत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही मद्देज़िल्लेहुल्आ़ला कोई नई बात इर्शाद नहीं फ़रमा रहे बल्कि उम्मते मुहम्मदिया के अकाबरीने इस्लाफ़ ने भी इसी दीने हनीफ़ का पर्चार किया जिस को मोजूदा नफ़्स व माद्दह् परस्ती के दौर में लोग फरामोश कर चुके हैं और हज़रत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही मद्देज़िल्लेहुल्आ़ला ग़ाफ़िल रुहों को वही ''दीन ए हनीफ़'' दोबारा याद दिला रहे हैं।

अकाबरीने उम्मते मुहम्मदिया में से चंद के फर्मूदात

''दीन ए इलाही'' ''दीन ए हनीफ़'' के बारे में मुलाहिज़ा हों।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला का फ़रमान आली शान है

तर्जुमाः पस तुम यकसू होकर अपना मुंह दीन की तरफ़ सीधा करलो, अल्लाह की वो फ़ितरत जिस पर इसने लोगों को पैदा फ़रमाया है, अल्लाह के बनाए को बदलना नहीं यही रास्त दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। अल्लाह की तरफ़ रूजू होकर इस से डरते रहो और नमाज़ को क़ायेम रखो और मुश्रकीन में ना मिल जाओ। जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और खुद भी गिरोह गिरोह हो गए हरगिज़ वो इस चीज़ पर जो इस के पास है नाज़ाँ है।

सूरत अलरुम। आयात। 30,31,32 पारा 21. इन आयात की तफसीर में चंद मुफस्सरीन के इरशादात मुलाहिज़ा हों

अ़ल्लामा इब्ने कसीर और दीने इलाही:

अल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं मिल्लते इब्राहीम हनीफ़ पर जम जाओ जिस दीन को अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर कर दिया है और जिसे ऐ नबी अल्लाह तआ़ला ने आपके हाथ पर कमाल को पहुंचाया है। इसी पर यानी तोहीद पर रब ने तमाम इन्सानों को बनाया है रोज़े अव्वल में इसी का सब से इक़रार लिया गया था कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं तो सब ने इक़रार किया बेशक तू ही हमारा रब है। लोगो! अल्लाह की इस फितरत को ना बदलो, लोगों को इस राहे रास्त से ना हटाओ। तफसीर इब्न कसीर। जिल्द चहारुम। सूरत अलरुम, तफ़सीर आयात 30, 31, 32 पारा 21।

हदीस शरीफ़ का तर्जुमा: बुख़ारी शरीफ़ में बरवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ी. फ़रमाने रसूल सल. है कि, हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है फिर इसके मां बाप इसे यहूदी, नसारा और मजूसी बना देते हैं जैसा कि बकरी का सही सालम बच्चा होता है जिस के कान लोग कुतर देते हैं फिर मज़कूरः बाला आयत तिलावत फ़रमाई, मुस्तनद इमाम अहमद वग़ैरः में हदीस शरीफ है कि हज़रत अ़याज़ बिन हम्मार से रवायत है कि हुज़ूर सल. ने अपने एक खुतबे में इरशाद फ़रमाया है कि मुझे जनाब बारी तआ़ला ने हुक्म दिया है कि जो इसने मुझे आज सिखाया है और इससे तुम जाहिल हो वो मैं तुम्हें सिखा दूं। फ़रमाया है कि जो मैंने अपने बन्दों को दिया है मैंने इनके लिए हलाल किया है मैंने अपने सब बन्दों को यक तरफा ख़ालिस दीन वाला बनाया है इनके पास शैतान पहुँचता है और इन्हें दीन से गुमराह करता है और हलाल को इन पर हराम करता है और इन्हें मेरे साथ शरीक करने को कहता है जिस की कोई दलील नहीं। अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन वालों की तरफ निगाह डाली और अ़रब व अ़जम सब को नापसंद फ़रमाया सिवाए चंद अहले किताब के कुछ लोगों के। कि वो फ़रमाता है कि मैंने तुझे सिर्फ आज़माइश के लिए भेजा है तेरी अपनी भी आज़माइश होगी और तेरी वजह से और सब की भी। मैं तुझ पर वो किताब उतारूंगा जिसे पानी धो ना सके तू उसे सोते जागते पढ़ता रहेगा फिर मुझसे जनाब बारी तआ़ला ने फ़रमाया कि मैं कुरैश को होशियार करदूं, मैंने अपना अंदेशा ज़ाहिर किया कि कहीं वो मेरा सर कुचल कर रोटी की तरह ना बना दे? तो फ़रमाया सुन! जिस तरह यह तुझे निकालेंगे मैं उन्हें निकालूंगा तू इन से जिहाद कर मैं तेरा साथ दूंगा। तू खर्च कर तुझ पर खर्च किया जाएगा, तू लशकर भेज मैं इससे पाँच गुना ज़्यादा लशकर भेजूंगा। फ़रमांबर्दारों को लेकर अपने नाफ़रमानों पर चढ़ाई करदे। (रवायते मुस्लिम)

इन्हीं मज़कूरः अल्सदर आयाते मुबारकः की तफ़सीर में बेशुमार मुफस्सिरीन इकराम मसलन अ़ल्लामा काज़ी सनाउल्लाह पानी पती ने तफसीर मज़हरी में, अ़ल्लामा मुहम्मद इस्माईल हक़्क़ी ने तफ़सीर रुहुल्बयान में, अल्लामा सैयद महमूद अलवासी ने तफसीर रुहुल्मआ़नी में, सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी ने कंजुल्ईमान के हाशिया ख़ज़ाइनुल्इर्फ़ान में और दीगर मुफ़स्सिरीन ने इसी क़िस्म की बातें लिखी हैं। नेज़ हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी ने मक्तूबात शरीफ़, आला हज़रत अहमद रज़ाखान बरेलवी ने मलफूज़ात शरीफ़ में, और दीगर औलियाए उम्मत व अकाबरीने मस्लक ने अपनी अपनी कुतब में इस हवाले से बहुत कुछ तहरीर किया है जिस का खुलासा यह है कि

1) अल्लाह तआ़ला का असल दीन वो इक़रारे तोहीद है जो उसने रोज़ ए अज़ल तमाम अरवाह से लिया था।

2) तख़लीक़ ए अरवाह और इनसे अपनी तौहीद व रबूबियत का इक़रार लेने का मक़सद यह था कि इन अरवाह की असल फितरत और जिबल्लत में अल्लाह तआ़ला ने अपनी मारफ़त और पहचान की इस्तेदाद और विसाले इलाही की तड़प रख दी।

3) इक़रार तौहीद के अ़हद के वक़्त कुछ अरवाह सिर्फ और सिर्फ ज़ाते इलाही की तालिब हुईं और उन्होंने दुनिया और उक़्बा और जन्नत की नेअ़्मतों की तरफ़ आँख उठा कर भी न देखा। वो अल्लह की आशिक़ ख़ासुल ख़ास मरतबे वाली अरवाह हो गईं कि जिन का अल्लाह तआ़ला भी शदीद मुशताक़ है गोया रुहों का दीन ''दीन ए इलाही'' दर्असल मारफ़त व इश्क़े इलाही है।

4) कुरान मजीद ने इस दीन ए इलाही का ज़िक्र कई नामों से किया है मसलन ''दीन ए अल्लाह, दीन ए इस्लाम, दीन ए क़ईम, दीन ए हक़, दीन ए ख़ालिस, दीन ए हनीफ़ और सिराते मुस्तक़ीम वग़ैरह।

5) यही दीन ए इलाही, विसाले इलाही, इश्क़े इलाही तमाम मज़ाहिब की रुह और जान है। तमाम अम्बिया अकराम बशमूल ख़ातिमुन्नबीईन दर्असल मख़लूक़े खुदा को एक ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह तआ़ला की ज़ात की पहचान और इश्क़ के इसी वादे की याद दहानी केलिए तशरीफ़ लाए। गोया दीन ए इलाही तमाम अम्बिया का मुशतर्का दीन है।

6) दीन ए इलाही में कोई फिर्क़ा नहीं है बल्कि दीन ए इलाही के पैरूकार अपने आप को उम्मती कहलाते हैं और जिस दीन में फिर्क़े हो जाएं वो अल्लाह का दीन नहीं है।

7) अगर अल्लाह चाहे तो तमाम इन्सानों को इसी एक दीन पर करदे लेकिन अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में जिसे चाहे लेता है।

8) लेकिन यक़ीनन अल्लाह तआ़ला जिसे चाहेगा उनको तमाम उम्मतों में से चुन कर अपनी रहमत दीन ए इलाही में दाख़िल कर देगा और यह काम हज़रत इमाम मेहदी अलै. करेंगे आप अलै. के ज़मानाए सलतनत में सिर्फ एक दीन ''दीन ए इताही'' होगा इसके अ़लावा कोई मज़हब या फ़िर्क़ा बाक़ी नहीं रहेगा। सब लोग मोवह्हिद यानी तौहीद परस्त हो जाएंगे।

दीन ए इलाही के चंद इक्तेबासात

1-अगर आप किसी मज़हब में हैं लेकिन अल्लाह की मुहब्बत से महरुम हैं, इन से वो बहतर हैं जो किसी मज़हब में नहीं लेकिन अल्लाह की मुहब्बत रखते हैं।

2- मुहब्बत का तअ़ल्लुक दिल से है, जब दिल की धड़कन के साथ अल्लाह अल्लाह मिलाया जाता है, तो वो खून के ज़रिए नस नस में पहुँच कर रुहों को जगाता है. फिर रुहें अल्लाह के नाम से सरशार होकर अल्लाह की मुहब्बत में चली जाती हैं।

3- रब का कोई भी नाम ख़्वाह किसी भी ज़बान में हो क़बिल ए तअ़ज़ीम है लेकिन रब का असली नाम सुर्यानी जुबान में अल्लाह है जोकि अर्शियों की जुबान है, इसी नाम से फरिश्ते उसे पुकारते हैं और हर नबी के कलमे के साथ मुंसलिक है।

4- जो भी शख़्स सच्चे दिल से रब की तलाश में बहरोबर में है वो भी क़ाबिले तअ़ज़ीम है।

5- इस दुनिया में एक ही वक़्त में अ़लैहिदा अ़लैहिदा ख़ित्तों में कई आदम आए। तमाम आदम दुनिया में दुनिया की ही मिट्टी से बनाए गए, जब्कि आख़री आदम जो अ़रब में दफ़्न हैं बहिश्त की मिट्टी से वाहिद बनाए गए, इनके सिवा किसी और आदम को फरिशतों ने सिजदा नहीं किया। इब्लीस इसी आदम की औलाद का दुशमन हुआ।

6- इन्सान के जिस्म में सात क़िस्म की मख़्लूक़ें हैं, जिनका तअ़ल्लुक अलैहिदा अलैहिदा आसमानों अलैहिदा अलैहिदा बहिशतों और इन्सान के जिस्म में अलैहिदा अलैहिदा कामों से है। अगर इनको नूर की ताक़त पहुँचाई जाए तो यह उस इन्सान की सूरत में एक ही वक़्त में कई जगह हत्ता कि वलियों, नबियों की मजलिस और रब से हमकलाम या दीदार तक पहुँच सकती हैं।

7- हर इन्सान के दो मज़्हब होते हैं, एक जिस्म का मज़्हब जो मरने के बाद ख़त्म हो जाता है, दूसरा अरवाह का मज़्हब जो कि रोज़े अज़ल में था यानी अल्लाह से मुहब्बत, इसी के ज़रिए इन्सान का मरतबा बुलंद होता है।

8- सब मज़ाहिब से बालातर रब का इश्क़ है, और सब इबादात से बालातर रब का दीदार है।

9- इन्सान, हैवानों, दरख़्तों और पत्थरों के मुतल्लिक मालूमात, कि यह किस तरह वजूद में आए और क्यों कोई हराम और कोई हलाल हुआ।

10- अरवाह और फरिशतों के अमर ए कुन से भी पहले कौन सी मख़्लूक़ थी? वो कौन सा कुत्ता था जो हज़रत क़तमीर बन कर जन्नत में जाएगा? और वो कौन से लोग हैं जिनकी रूहों ने अज़ल में ही क़ल्मा पढ़ लिया था।

ज़हूर ए मेहदी अलै.

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही मद्देज़िल्लेहुल्आ़ला की ज़ाते गिरामी मुहताजे तआ़रुफ़ नहीं भला जिस हस्ती की मुबारक शबीह अल्लाह तआ़ला ने चाँद, सूरज, हज्र अस्वद और दीगर बेशुमार मक़ामात पर ज़ाहिर कर दी और मुस्लिम ग़ैर मुस्लिम सब को आप की तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा रहा है यानी आप के चरचे आसमानों और ज़मीनों में अल्लाह तआ़ला ख़ुद आ़म फ़रमा रहा है और आप की नूरी नज़रें बिला तफ़रीक़ मज़्हब व मस्लक और बिला इम्तियाज़ रंग व नस्ल तमाम इन्सानों और दीगर ग़ैर मरई मख़्लूक़ात को नूरे रब्बुल्आ़लमीन अ़ता फ़रमा रही हैं। कुलूब को इस्मे ज़ात अल्लाह के नूर से ज़िन्दा और रोशन फरमा रहीं हैं। बल्कि बेशुमार लोगों ने और हम ने ख़ुद आप की पुश्ते मुबारक पर कल्मा तैइबा के साथ मोहरे मेहदियत देखी है जो नसों से उभरी हुई है जब्कि आप के मुबारक हाथ की उंगलियों पर इस्मेज़ात अल्लाह और दूसरे हाथ की पुश्त पर इस्मे मुहम्मद सल. इतना वाज़ेह और कुदरती तौर पर नसों से उभरा हुआ है जो कि आप के इमाम मेहदी होने की वाज़ेह दलील है।

हज़रत गौहर शाही की पुश्त मुबारक पर मोहर ए मेहदियत

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही के जिस्म नाज़नीन पर यूं तो जाबजा मुख़्तलिफ़ एअ़ज़ा पर इस्म अल्लाह, इस्म मुहम्मद और क़ुरानी आयात नक़्श हैं। लेकिन पुश्ते मुबारक पर मोहरे मेहदियत ख़ास अहमियत की हामिल है। दुनिया भर में मुख़्तलिफ़ मुमालिक में मौजूद कई अ़क़ीदत मन्दाने गौहर शाही, हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही की पुश्त मुबारक पर सब्त मोहरे मेहदियत खुली आँखों से कई बार देख चुके हैं यह मोहरे मेहदियत पुश्त मुबारक में नसों से उभरी हुई है और अक्सर अह्बाब ने इस में से नूर की शुआ़एं भी निकलती देखी हैं।

मोहरे मेहदियत के ऐनी शाहिद

यूं तो बेशुमार अफ़राद को मोहरे मेहदियत देखने की सआ़दत अ़ता हुई लेकिन हम मज़मून की तवालत के ख़ौफ़ के बाइस, महज़ चीदा चीदा चन्द अह्बाब के नाम दर्ज कर रहे हैं।

1- मोहतर्मा सुग़रा बेगम...........कोटरी...........पाकिस्तान

2- फ़ज़ल करीम उर्फ पप्पू भाई.........कोटरी.......पाकिस्तान

3- मुहम्मद यूनुस अल्गौहर.............लंदन.......इंग्लैंड

4- साजिदा गौहर.........लंदन.......इंग्लैंड

5- मुहम्मद आज़म अल्गौहर..........लंदन.......इंग्लैंड

6- फैसल हयात.............लंदन.......इंग्लैंड

7- ग़ुलाम मुर्तुज़ा मेहदवी.............लंदन.......इंग्लैंड

8- हाजी अशफ़ाक़ अहमद.........शारजाह..........मुत्तहिदा अरब इमारात

9- नुज़हत अशफाक़ अहमद.........शारजाह.......... मुत्तहिदा अरब इमारात

10- शम्सा गौहर.........शारजाह.......... मुत्तहिदा अरब इमारात

11- अमजद अली.........अबुज़हबी........ मुत्तहिदा अरब इमारात

12- शाज़िया अमजद.........अबुज़हबी........ मुत्तहिदा अरब इमारात

13- शौकत अली.........अबुज़हबी........ मुत्तहिदा अरब इमारात

14- शाहीन शौक़त.........अबुज़हबी........ मुत्तहिदा अरब इमारात

15- मज़हर फिरोज़..........वर्जीनिया...........अमरीका

16- मुहम्मद अनीस........दुबई...... मुत्तहिदा अरब इमारात

17- जन्नत बीबी.............लंदन.......इंग्लैंड

18- शहनाज़...........बरमिंघम......... इंग्लैंड

19- ख़दीजा बेगम........मानचेस्टर........ इंग्लैंड

20- शबाना........मानचेस्टर........ इंग्लैंड

21- शहबाज़ अहमद.............लंदन.......इंग्लैंड

22-अन्वार अहमद सिद्दीक़ी.............लंदन.......इंग्लैंड

23-हाफिज़ नदीम सिद्दीक़........कराची..........पाकिस्तान

24-अम्बरीन अहमद..........वर्जीनिया...........अमरीका

खूए शाही

भेस भर के मेहदी का आया यहाँ मौलाए कुल
जिसका डंका बजता है कौनो मकाँ, हर जाये कुल
मक़सदे गौहर हुआ कि हर जौहरे नायाब को
अपने मन के देश में कर दे उसे सरमाये कुल
बा इरादा हो के जब सूए ज़मीं आया गौहर
ढूंढने निकला वो इस ख़ित्ते पे भी अ़नक़ाये गुल
चलते-चलते इक मुक़ामे इश्क़ वो गोया हुआ
मक़सदे पिनहाँ बता कर कहता था कि हाये गुल
खूए शाही ढूंढता था खूए इंसानी में वो
जिसको देखा इज्ज़ का पैकर, किया अबनाये गुल
इक तरीक़े फ़क़र था सरमाया उसके हाथ में
यद्‌दे दोयम में लिये बैठा था वो ईक़ाये गुल
सह रहा था ख़ामुशी से सब तमन्नाओं का खूं
फिर अचानक, एक दिन लौटा वो पस असनाये कुल
आक़ाये बेमिस्ल ने फेहरिस्त जारी कर ही दी
पस गुलामी सब्त है आक़ा से और इसलाहे कुल
बशर ख़ूए शर है पस तू रियाज़ से बारियाज़ हो
ख़ूए गौहर सीख ताकि हो सके अजमाए़ कुल
ख़रक़े आदम, ख़ूए आदम में फ़ना रह जायेगा
ख़ूए गौहर, ख़ूए आदम से कहे इलक़ाये कुल
यूनुसे खुश बख़्त रियाज़े हस्ती में महका रहे
वो रियाज़ी गुल कि जिसके हैं ये सब अजज़ाये कुल

लंदन 16 मार्च....2002